आरती

छूम छूम छ ना ना ना बाजे
बाबा करूँ आरतिया।
विद्या गुरु के शिष्य महा रे। - 2
पूज्य क्षमा सागर मुनि न्यारे॥ - 2
जग में सबसे न्यारे, बाबा करूँ आरतिया...
जीवन सिंघई पिता जी तुम्हारे। - 2
आशा के वीरेंद्र दुलारे॥ - 2
सागर जन्म लिया रे, बाबा करूँ आरतिया...
हाई-टेक एम्-टेक त्याग पढ़ाई। - 2
गुरु से मुनि दीक्षा अपनाई॥ - 2
हुए क्षमासागर रे, बाबा करूँ आरतिया...
ज्ञानी ध्यानी अनुसंधान। - 2
मीठी मधुर सुनाई वाणी॥ - 2
देते धर्म सहारे, बाबा करूँ आरतिया...
कर्मोदय से पाकर व्याधि। - 2
अल्प आयु में किये समाधि॥ - 2
सबका भाग्य संवारे, बाबा करूँ आरतिया...
जगमग जगमग झिलमिल झिलमिल। - 2
भक्ति आरती करते झिलमिल॥ - 2
'सुव्रत' दीप उजारे, बाबा करूँ आरतिया...

===

भजन

(तर्ज–दिल दीवाना...)

श्री मुनिवर जी क्षमासागर की जय करना।
जग से न्यारे, सब के प्यारे, मुनि हैं ना॥
विनय दिखाके भक्ति बढ़ाके सिर धरना।
जग से न्यारे, सब के प्यारे, मुनि हैं ना॥

पूज्य क्षमासागर जी मुनिवर, विद्यागुरु के चेले॥ हो...2
हाई टेक, एम् टेक, अनुसंधानी, अद्वितीय अलबेले।
ऐसे मुनि को, विनय गुणीं हो, चित धरना।
जग से न्यारे, सब के प्यारे, मुनि हैं ना॥ 1॥

जीवन सिंघई आशा देवी जी माता-पिता तुम्हारे। हो...2
जन्मे सौगढ सागर नगरी श्री वीरेंद्र दुलारे॥
जग में रमे न, घर में रुके न, मुनि बनना।
जग से न्यारे, सब के प्यारे, मुनि हैं ना॥ 2॥

मधुर मनोहर मीठी वाणी, दिव्य देशना जैसे। हो...2
अल्प उम्र में हुई समाधी, सहें वियोग हम कैसे॥
सुव्रत धर के, मुनि को भज के, पथ चलना।
जग से न्यारे, सब के प्यारे, मुनि हैं ना॥ 3॥

===

भजन

(तर्ज–दिल के अरमां...)

आइये हम भी करें मुनि अर्चना।
श्री क्षमासागर मुनि की वंदना॥
विद्या गुरुवर के निराले शिष्य हो।
भक्त जन के प्राण प्यारे पुष्य हो॥
जैन शासन की किये शुभ साधना।
श्री क्षमासागर मुनि की वंदना॥1॥
जीवन आशा देवी के बीरेंद्र तुम।
त्याग सागर उच्च शिक्षा द्वंद्व तुम॥
मुनि विरागी बन किये निज भावना।
श्री क्षमासागर मुनि की वंदना॥2॥
मुनि तपस्या कर समाधि कर गये।
दुःख वियोगो का हमें देकर गये॥
मैत्री की शिक्षा दिये शुभ कामना।
श्री क्षमासागर मुनि की वंदना॥3॥
है नमोस्तु आपको निज ध्यान से।
धर्म के दीपक जला श्रद्धान से॥
'सुव्रत' की भक्ति करें नित प्रार्थना।
श्री क्षमासागर मुनि की वंदना॥4॥

===

पुण्यार्जक

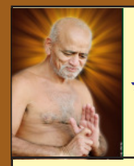

मुनि श्रीक्षमासागरजी पूजन

रचयिता–मुनि श्रीसुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तुति–बा. ब्र. संजय, मुरैना

स्थापना

(लय–इतनी शक्ति हमें देना दाता...)

शिष्य विद्या गुरुवर के न्यारे, जैन शासन के अनुपम सितारे।
क्षमा सागर मुनिवर जी प्यारे, है नमोऽस्तु तुम्हें नित हमारे।
ज्ञानी विज्ञानी अध्यात्म ध्यानी, धर्म की जो ध्वजा को उड़ाए।
श्रद्धा भक्ति से हम आज पूजें, मन के मंदिर में सादर बुलाएं॥
नाथ! आओ सुनो प्रार्थना ये, हैं प्रतीक्षारत हम तुम्हारे।
क्षमा सागर मुनिवर जी प्यारे, है नमोऽस्तु तुम्हें नित हमारे॥

ॐ ह्रः श्री क्षमासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ...। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं)

छीण काया के होते हुए भी, आप रत्नात्रयों को संभाले।
अच्छा जीवन सभी का बनाने, बाँटे धार्मिक गुणों के प्याले॥
हम भी आए शरण आपकी हैं, हम पे करुणा का जल तो बहा रे।
क्षमा सागर मुनिवर जी प्यारे, है नमोऽस्तु तुम्हें नित हमारे॥

ॐ ह्रः श्री क्षमासागरमुनीन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

रोगी होकर न विचलित हुए तुम, ना ही अंगार बनके जलाएँ।
किंतु शीतल मधुर वाणी द्वारा, सबके हृदय को मधुबन बनाएँ॥
हम भी चरणों में आए हैं हमकोए अपनी चंदन से छाया दिला रे।
क्षमा सागर मुनिवर जी प्यारे, हैं नमोऽस्तु तुम्हें नित हमारे॥

ॐ ह्रः श्री क्षमासागरमुनीन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

पाये संकट सदा आपने पर, लक्ष्य ओझल ना होने दिया है।
पालो निर्दोष अपने व्रतों को, ऐसा संदेश सबको दिया है॥
बनके अक्षय समाधि के सम्राट, सबको देते दुखों में सहारे।
क्षमा सागर मुनिवर जी प्यारे, है नमोऽस्तु तुम्हें नित हमारे॥

ॐ ह्रः श्री क्षमासागरमुनीन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

करके एम. टेक जैसी पढ़ाई, अपने ब्रह्मचारी व्रत को न तोड़े।
आये जीवन में कितने प्रलोभन, उनमें उलझे ना ही मन को मोड़े॥
हम भी वैरागी हों आप जैसे, अपने पुष्पों से हमको खिला रे।
क्षमा सागर मुनिवर जी प्यारे, है नमोऽस्तु तुम्हें नित हमारे॥

ॐ ह्रः श्री क्षमासागरमुनीन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं...।

आप भोजन में आसक्त ना थे, किंतु भोगों में निर्लिप्त रहते।
जो लिया कुछ लिया औषधि सा, स्वस्थ भजनों में अनुरक्त रहते॥
देके भोजन भजन भक्ति का रस, जाने कितनों की किस्मत सवारे।
क्षमा सागर जी मुनिवर जी प्यारे, है नमोऽस्तु तुम्हें नित हमारे॥

ॐ ह्रः श्री क्षमासागरमुनीन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

ज्ञान विज्ञान के मंत्र पाके, माया नगरी अंधेरी ना भायी।
पाके अध्यात्म विद्या गुरु से, अपनी चेतन्य ज्योति जलाई॥
छात्र-छात्राओं के पथ प्रदर्शक, हमको भी आप देना इशारे।
क्षमा सागर मुनिवर जी प्यारे, है नमोऽस्तु तुम्हें नित हमारे॥

ॐ ह्रः श्री क्षमासागरमुनीन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं...।

कर्म की आंधियाँ जब भी आए, कर्म सिद्धांत को याद रखना।
खुद ब खुद होंगे आसान रस्ते, अपने ईश्वर पर विश्वास रखना॥
प्रेम वात्सल्य से ढांडस बंधाते, देके मुस्कान समता को धारे।
क्षमा सागर मुनिवर जी प्यारे है, नमोऽस्तु तुम्हें नित हमारे॥

ॐ ह्रः श्री क्षमासागरमुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

पर की पीड़ा में पिघले निरंतर, बदले में चाहो आदर्श जीवन।
छत्र छाया में आए जो उनको, मैत्री सिखलाये श्री जैन दर्शन॥
बाँटे उपकार के फल रसीले, कैसे ऋण हम चुकायें तुम्हारे।
क्षमा सागर मुनिवर जी प्यारे, है नमोऽस्तु तुम्हें नित हमारे॥

ॐ ह्रः श्री क्षमासागरमुनीन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

इतनी शक्ति हमें आपने दी, मन का विश्वास कमजोर ना कर।
विद्या गुरुवर की भक्ति सिखाकर, छोड़ हमको गए तुम कहाँ पर॥
देना 'सुव्रत' को सानिध्य ऐसा, हम तुम्हारे रहे तुम हमारे।
क्षमासागर मुनिवर जी प्यारे, है नमोऽस्तु तुम्हें नित हमारे॥

ॐ ह्रः श्री क्षमासागरमुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

पूज्य क्षमा सागर रहे, क्षमा मूर्ति मुनिराज।
हम सब के आदर्श हैं, जिनको नमोऽस्तु आज॥

(जोगीरासा)

स्वामी रे स्वामी ये तो बता, तूने कौन सा पुण्य कमाया।
खुश होकर गुरुवर ने तुम्हें, क्षमासागर मुनि बनाया॥
गुरुवर के चरणों में नमन... मुनिवर के चरणों में नमन...
बोलो जय-जय-जय... बोलो जय-जय-जय...
पूज्य क्षमासागर जी मुनि को, श्रद्धा सुमन चढ़ाएँ।
मुनि चरणों में करके नमोऽस्तु, सादर शीश झुकाएँ॥
ईश्वरबारा निकट पीपरा, मनेसिया की बस्ती।
जीवनलाल सिंघई की जिसमें, पैतृकता की धरती॥1॥
गुरुवर के चरणों में नमन... मुनिवर के चरणों में नमन...
मनेसिया को छोड़ सिंघई जी, सागर नगरी आए।

ग्रहणी आशा देवी के संग, पहली बेटी पाए॥
दूजा बेटा अरुण रूप में, फिर वीरेंद्र जन्मते।
20 सितंबर 57 सन, बालक पले यतन से॥2॥
गुरुवर के चरणों में नमन... मुनिवर के चरणों में नमन...
लौकिक शिक्षा एम.टेक. तक, पाकर हुए विरागी।
'विद्या' गुरु को हुए समर्पित, वन बैठे गृह त्यागी॥
लाड़ प्यार से पले पुत्र को, परिजन कैसे छोड़े।
सो वापिस घर इन्हें लिवाने, निकट गुरु के दौड़े॥3॥
गुरुवर के चरणों में नमन... मुनिवर के चरणों में नमन...
संकल्पित वैराग्य देख गुरु, चरण शरण में लेते।
10 जनवरी 80 सन् में, छुल्लक दीक्षा देते॥
बने क्षमासागरजी छुल्लक, तीरथ नैनागिरी में।
7 नवंबर इसी वर्ष में, ऐलक मुक्तागिरी में॥4॥
गुरुवर के चरणों में नमन... मुनिवर के चरणों में नमन...
बने 20 अगस्त 82 में, मुनि क्षमासागरजी।
अद्भुत प्रतिभा क्षमा रूप में, धरे क्षमासागरजी॥
शीतल मधुर मनोहर वाणी, से करुणा झलकाए।
आगममय साहित्य सृजन कर, ज्ञानामृत बरसाए॥5॥
गुरुवर के चरणों में नमन... मुनिवर के चरणों में नमन...
आत्मान्वेषी अमूर्त-शिल्पी, गुरुवाणी इत्यादि।
पगडंडी सूरज तक आदिक, रचे प्रेरणा भी दी॥
धर्म और विज्ञान समझने, मैत्री समूह बनाया।
धर्म यंग-जैना-अवार्ड से, छात्रों तक पहुँचाया॥6॥
गुरुवर के चरणों में नमन... मुनिवर के चरणों में नमन...

रोगी रहे छीण काया मय, लेकिन मनोबली थे।
खड्गासन में ऐसे लगते, जैसे बाहुबली थे॥
सदा समय पाबंद रहे हो, अनुशासन के प्रिय थे।
प्रवचन सुनके सभी मुग्ध हो, लोकप्रिय शिशु प्रिय थे॥7॥
गुरुवर के चरणों में नमन... मुनिवर के चरणों में नमन...
पुण्य बाँटते पुण्यात्मा थे, फिर भी कर्म सताए।
लाइलाज रोगों को पाकर, शीघ्र समाधि पाए॥
2015 सागर में, सुबह मार्च तेरह को।
छोड़ गये नश्वर तन सबको, देकर शोक विरह को॥8॥
गुरुवर के चरणों में नमन... मुनिवर के चरणों में नमन...
सिखा गए गुरु भक्ति सभी को, धर्म भावना भर के।
सदा आपके ऋणी रहेंगे, हो नमोऽस्तु सिर धर के॥
धर्म नियम जो क्षमा सिखाए, उनका पालन कर लें।
'सुव्रत' रत्नत्रय को पालें, आशीर्वाद यही दें॥9॥
गुरुवर के चरणों में नमन... मुनिवर के चरणों में नमन...

ॐ ह्रः श्री क्षमासागरमुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

मुनिवर के गुणगान से, नशे रोग दुःख हान।
हम नमोऽस्तु कर चाहते, विश्व शांति कल्याण॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं...)

===